an>

Title: The Minister of External Affairs (Shrimati Sushma Swaraj) made a statement regarding her alleged role on the issue of request made to the British Government for issuing travel document to Former IPL Chief.

विदेश मंत्री तथा पूवासी भारतीय कार्य मंत्री (श्रीमती सुÂामा स्वराज) : अध्यक्षा जी, मैं सबसे पहले इस बात को स्पÂट करना चाहूंगी कि मैं विपक्ष के अपने साथियों की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर अपने से संबंधित विÂाय पर चर्चा को रोकने के लिए प्रीएम्प्ट या स्कटल करने के लिए खड़ी नहीं हुई हूं, बल्कि मैं अपनी ओर से इस विÂाय पर चर्चा कराने का अनुरोध करने के लिए खड़ी हुई हूं।

अध्यक्षा जी, पिछले लगभग दो माह से मीडिया के माध्यम से मेरे खिलाफ अपप्रचार चल रहा है, लेकिन मैं शांति से बैठकर संसद के मानसून सत्र की प्रतीक्षा करती रही कि संसद का सत्र शुरू होगा, इस विÂाय पर चर्चा होगी और मैं हर प्रश्न का विस्तार से उत्तर दूंगी। जैसे ही सत्र शुरू हुआ, मैंने दोनों सदनों के पीठासीन अधिकारियों को भी सूचित किया, सदन में खड़े होकर भी कहा कि मैं इस पर चर्चा करवाना चाहती हूं और आज ही तैयार हूं, तुरंत तैयार हूं। लेकिन अध्यक्षा जी, दो सप्ताह बीत गये और तीसरा सप्ताह कल बीत जायेगा। मैं दोनों सदनों में बारी-बारी से बैठती रही कि शायद आज चर्चा हो जाये, लेकिन चर्चा होना तो दूर, चर्चा के कोई आसार भी मुझे नजर नहीं आ रहे। सत्र समाप्त हो जाये और आरोप अनुत्तरित रह जायें, मुझे अपनी स्थिति, अपना पक्ष रखने का भी मौका न मिले, यह मेरे साथ बहुत बड़ा अन्याय होगा। इसीलिए आज मैंने आपसे यह प्रार्थना की कि मुझे कुछ कहने के लिए आप अनुमति दें। लेकिन तो भी मैं पुनः कह रही हूं कि अभी एक सप्ताह बाकी है। अगले सप्ताह सांसदों का निलम्बन भी समाप्त हो जायेगा। उनकी सहयोगी पार्टियों का बहिÂकार भी समाप्त हो जायेगा। मैं भी कोशिश करूंगी, आप भी कोशिश कीजिए कि कम से कम अगले सप्ताह इस विÂाय पर चर्चा जरूर हो जाये, ताकि जो प्रश्न मीडिया में उछाले जा रहे हैं, आर्टिकल्स लिख-लिखकर मुझसे पूछे जा रहे हैं, उन तमाम प्रश्नों का उत्तर मैं इस सदन में खड़े होकर के विस्तार से दे सकूं। जहां तक आज का सवाल है, जब मैं अपने इर्द-गिर्द का माहौल देखती हूं, तो मुझे रामचरित मानस का एक दोहा याद आता है। आप मानस पर बहुत अधिकार वाणी से बोलती हैं। आपको मालूम है कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने एक दोहा लिखा, जिसकी दूसरी पंक्ति है -- 'हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ'। मुझे लगता है कि यह नफा-नुकसान, जीना-मरना, नेकनामी और बदनामी जो गूहों ने अपने हाथ में रखी हुई है, जरूर मेरा कोई अपयश का गूह चल रहा होगा, तभी तो मेरे वे साथी जो मुझे इतना स्नेह देते हैं, इतना आदर करते हैं, वे आज मेरी इतनी तीखी आलोचना कर रहे हैं, यहां तक कि मेरा इस्तीफा मांग रहे हैं। लेकिन मुझे यह भी विश्वास है कि गूह बहुत जल्दी टलेगा और मेरे साथियों का सद्भाव वापिस लौटेगा।

अध्यक्षा जी, मुझ पर यह आरोप लगाया जा रहा है कि मैंने ललित मोदी को यात्रा दस्तावेज देने के लिए ब्रिटिश सरकार से अनुरोध किया या सिफारिश की। मैं सदन के ऊपर खड़े होकर के पूरी जिम्मेदारी के साथ कहना चाहती हूं कि यह आरोप सिरे से गलत है, असत्य है, निराधार है। मैंने कभी भी ब्रिटिश सरकार से ललित मोदी को यात्रा दस्तावेज देने का अनुरोध नहीं किया। मैंने कभी भी ब्रिटिश सरकार से ललित मोदी को यात्रा दस्तावेज देने की सिफारिश नहीं की। मैंने कभी रिक्वैस्ट नहीं की, कभी रिकमेंडेशन नहीं की। आपको मालूम है कि अनुरोध और सिफारिश पत्रों की एक भाÂाा तय होती है। जब हम किसी से अनुरोध करते हैं, तो हम कहते हैं कि यह काम कर दीजिए। जब हम सिफारिश करते हैं तो हम कहते हैं कि हमारी राय में यह काम कर देना चाहिए। अगर मैं अनुरोध करती तो मैं ब्रिटिश गवर्नमैंट को कहती - 'kindly give travel documents to Lalit Modi'.

अगर मैं सिफारिश करती तो मैं लिखती - "I recommend that travel documents should be given to Lalit Modi." मैं आज यहां चुनौती देकर कहती हूं कि एक कागज, एक पर्ची, एक पुर्जा, एक चिट्ठी, एक ई-मेल मुझ पर आरोप लगाने वाले यहां पूस्तुत कर दें जिसमें मैंने ऐसा कोई भी वाक्य लिखा हो कि ललित मोदी को ट्रैवल डॉक्युमेंट्स दे दीजिए या आपको दे देने चाहिए। लेकिन मैं एक कागज पेश कर सकती हूं जो इकनामिक टाइम्स की खबर है। यह इकनोमिक टाइम्स की कतरन है, इकनोमिक टाइम्स अखबार ने ब्रिटेन के होम आफिस को लिखा यानी ब्रिटेन के गूह मंत्रालय को लिखा और उनसे पूछा कि आपने ललित मोदी को दस्तावेज किस आधार पर दिए। उनके गूह मंत्रालय ने इकनोमिक टाइम्स को जवाब दिया और कहा -

> "The UK Home Department on Monday claimed that travel documents issued to former IPL boss, Lalit Modi, to travel to Portugal to assist his ailing wife 'was determined in accordance with the appropriate rules'."

यह मेरे द्वारा लिखा गया जवाब नहीं है, मेरे द्वारा पूछा गया पूश्न भी नहीं है। इकनोमिक टाइम्स अखबार ने ब्रिटेन के गूह मंत्रालय से पूछा और ब्रिटेन के गूह मंत्रालय ने ई-मेल के माध्यम से उनको जवाब दिया। मैं इकनोमिक टाइम्स की आभारी हूं कि उन्होंने यह जानकारी अपने तक नहीं रखी बल्कि पाठकों के साथ शेयर की, अपने पाठकों को उन्होंने यह पढ़वाया।

माननीय अध्यक्ष जी, अगर मैंने अनुरोध किया होता, अगर मैंने रिकमेंडेशन की होती तो होम आफिस यह लिखता कि हमने ललित मोदी को यह यात्रा दस्तावेज भारत की विदेश मंत्री की रिक्वेस्ट पर दिए थे या हमने यह ट्रैवल डॉक्युमेंट्स भारत की विदेश मंत्री की रिकमेंडेशन पर दिए थे। उन्होंने जवाब दिया कि हमने उन्हें अपने नियमों के तहत दिए थे। आज मेरा कहना है कि इस जवाब के बाद यह मुद्दा समाप्त हो जाना चाहिए था क्योंकि यह नॉन इश्यू बन गया है। लेकिन इसके बाद भी यह मुद्दा जिंदा रखा गया और मुझसे सवाल किए गए कि आपने ऐसे क्यों किया, वैसे क्यों किया। मैं आपके माध्यम से कहना चाहती हूं कि कैसे किया, क्यों किया से पहले यह तो बता दो क्या किया। क्या किया? मैं पूछना चाहती हूं कि क्या मैंने ललित मोदी को कोई आर्थिक लाभ पहुंचाया, नहीं। क्या मैंने ललित मोदी को भारत से भगाया, नहीं। क्या मैंने ललित मोदी के खिलाफ चल रही जांच को रुकवाया, नहीं। क्या मैंने ललित मोदी को यात्रा दस्तावेज दिलवाने का अनुरोध किया, नहीं। तो मैंने किया क्या? मैंने पूरी तरह से यह निर्णय ब्रिटिश सरकार पर छोड़ा। मैंने उन्हें जो एक मौखिक संदेश भिजवाया उसका पहला वाक्य यह है -

> "If the British Government chooses to give travel documents to Lalit Modi that will not spoil our bilateral relations."

मैंने निर्णय ब्रिटिश सरकार पर छोड़ा, If the British Government chooses to give travel documents. यानि यदि ब्रिटिश सरकार ललित मोदी को यात्रा दस्तावेज देने का निर्णय करती है तो निर्णय उनका है। मैंने निर्णय में कोई भूमिका नहीं रखी। वे निर्णय दोनों तरह का कर सकते थे। वे न देने का भी कर सकते थे। अगर वे न देने का निर्णय करते तो मेरे संदेश का असर ही समाप्त हो जाता, वह निरर्थक हो जाता लेकिन उन्होंने निर्णय देने का किया। मैंने उनसे कहा कि आप अपने रूल्स और रैगुलेशन के तहत जांच करने के बाद अगर यात्रा दस्तावेज कर निर्णय करते हैं तब तो मेरे संदेश का असर तो उनके निर्णय के बाद शुरु होता। मेरी भूमिका न निर्णय करवाने में है और न निर्णय करने में है। यह संदेश मैंने शुद्ध मानवीय आधार पर भेजा, ह्यूमेनिटेरियन ग्राउंड पर भेजा। वह ह्युमेनटेरियन ग्राउंड क्या था?

माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से सदन को बताना चाहती हूं कि ललित मोदी की पत्नी पिछले 17 वÂाों से कैंसर से पीड़ित है। उसका कैंसर दसवीं बार उभरा था। वह पुर्तगाल के एक क्लीनिकल सैंटर जो रिसर्च सैंटर है, उसमें इलाज करवा रही थी। वहां उसका एसेसमेंट करने के बाद डॉक्टरों ने कहा कि इस बार का आपका कैंसर लाइफ थ्रेटनिंग है, जीवन घातक है, लेकिन हम जो इलाज करेंगे, वह इलाज खतरों से भरा हुआ है। यानी उस इलाज के दौरान उसकी मृत्यु भी हो सकती थी और उसकी दोनों किडनीज़ भी डैमेज हो सकती थीं। उन्होंने कहा कि आपकी डिसीज़ लाइफ थ्रेटिनिंग है, आपका इलाज खतरों से भरा है इसलिए हमें आप अपने पति के साथ यहां उस दिन चाहिए। 4 अगस्त की तारीख तय थी। ललित मोदी की पत्नी ने जो विटनैस स्टेटमेंट ब्रिटेन के होम ऑफिस में दिया और डायरेक्टर का जो पत्र उसके साथ लगाया, उसका एक एक पैराग्राफ मैं आपको पढ़कर सुनाती हूं। यह विटनैस स्टेटमेंट है और यह काफी बड़ा है लेकिन मैं इसके केवल आखिरी पैराग्राफ की चार लाइनें पढ़कर सुनाती हूं। वो कहती हैं:-

> "My medical condition has affected my family heavily and we need to support each other, in particular, I need their support and Lalit's support most of all. Lalit and I have been married for well over 20 years and have stood by each other through thick and thin. I need him now more than ever."

I need him now more than ever. ये अंतिम शब्द हैं और ये वहां के डायरेक्टर हैं जिनका नाम डा. कार्लो ब्रेक है। यह रिसर्च फाउंडेशन है जहां उसका इलाज चल रहा है, उन्होंने लिखा है:-

"Mrs. Modi's assessment was performed on July 14, 2014. Unfortunately there is evidence of disease which is potentially life threatening. We will have to thoroughly assess the risk benefit ratio of the treatment options with the patient and her next of kin before a final decision is made. A therapeutic procedure has been already scheduled for August 4 at CCU, Lisbon, Portugal. The presence of Mrs. Modi and her husband will be required before this date."

The presence of Mrs. Modi and her husband will be required before this date. अध्यक्ष जी, यही दो कारण थे जो कागज पढ़कर ब्रिटिश गवर्नमेंट ने उनको यात्रा दस्तावेज देने का निर्णय किया। मेरे सामने केवल एक प्रश्न था कि क्या मैं यह कह दूं कि आप ह्यूमेनिटेरियन ग्राउंड पर उनको यात्रा दस्तावेज जरूर दे रहे हैं लेकिन अगर आप ये यात्रा दस्तावेज देंगे तो आपके और भारत के रिश्ते खराब हो जाएंगे। मैं पूछना चाहती हूं कि अगर मेरी जगह आप होतीं तो आप क्या करतीं? मैं कहती हूं कि अगर मेरी जगह सोनिया जी ही होतीं तो क्या करतीं? क्या मरने के लिए छोड़ देतीं? यह इतना बड़ा मानवीय संवेदना का केस है जहां ललित मोदी की मदद नहीं हुई, मदद उस पत्नी की हुई जो भारतीय नागरिक है, ...(व्यवधान) जो किसी अपराध में लिप्त नहीं है। जिसके खिलाफ कोई केस देश या विदेश में नहीं चल रहा है और जो 17 वÂाों से केंसर से पीड़ित है, जिसका केंसर दसवीं बार उभरा है, जो एक जीवन घातक बीमारी झेल रही है और वह जो इलाज कराने जा रही है, वह इलाज खतरों से भरा है। इसलिए वह चाहती है कि उसका पति उस दिन अस्पताल में मौजूद हो, उसे भावनात्मक संबल देने के लिए भी और यह निर्णय देने के लिए भी कि यह ट्रीटमेंट आगे किया जाए या न किया जाए। अध्यक्ष जी, इस चीज को सामने रखकर मैंने यह कहा कि अगर ब्रिटिश सरकार उसको यात्रा दस्तावेज देने का निर्णय करती है तो हम दोनों देशों के रिश्ते खराब नहीं होंगे और मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि इस तरह की महिला की मदद करना यदि गुनाह है तो मैं कहना चाहती हूं कि यह गुनाह मैंने किया है और अध्यक्ष जी, आपको साक्षी मानकर इस सदन में खड़े होकर पूरे राÂट्र के सामने मैं अपना गुनाह कबूल करती हूं और यह सदन इसके लिए मुझे जो सजा देना चाहे, मैं वह भुगतने के लिए तैयार हूं।

12.23 hrs